(ख) उन्हें ऐसी पुस्तकें और सामयिक पत्र-पत्रिकायें दी जाती हैं जो उनके लिये उपयोगी मालूम हों। सिवाय प्रत्येक बहु-उद्देशीय संस्था में चलाये जा रहे बालिग शिक्षा केन्द्र के पुस्तकालय का उपयोग भी करती है।

(ग) ५२। प्रत्येक पुस्तकालय में लगभग ४०५ किताबें हैं। इनमें ज्यादातर पुस्तकें हिन्दी की हैं। उड़ीसा, रानीगंज और हैदराबाद के कोयला क्षेत्रों के केन्द्रों में यथोचित स्थानीय भाषाओं की कुछेक पुस्तकों का इन्तजाम भी किया गया है। कुछ केन्द्रों में खास तौर से बिहार कोयला क्षेत्रों में, अंग्रेजी की पुस्तकों की भी व्यवस्था है।

खान मजदूर कल्याण केन्द्र

११५४ श्री हेडा : क्या श्रम और रोजगार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे

(क) खान मजदूर कल्याण केन्द्र में आने वाले बच्चों को दूध, कलेवा और फल देने के निर्णय से कितने बच्चों को लाभ हो रहा है, और

(ख) दूध, कलेवा और फल बाटने के लिये बच्चों का किस आधार पर चुना जाता है ?

श्रम उपमंत्री (श्री आबिद अली) (क) लगभग ३,१०० ।

(ख) कोयला खनिकों के ऐसे सब बच्चे जो खान मजदूर कल्याण केन्द्रों में आते हैं, दूध और कलेवा पाने के हकदार हैं।

प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र

११५५ श्री हेडा क्या श्रम और रोजगार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि कोयला खानों की कल्याण संस्थाओं के प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में किस स्तर की शिक्षा दी जाती है ?

श्रम उपमंत्री (श्री आबिद अली) बालिग कामगरों को पढ़ना, लिखना और साधारण हिसाब-किताब सिखाया जाता है। इसके साथ-साथ, स्वास्थ्य, सफाई, नागरिक जीवन सम्बन्धी बातों, श्रम कानूनों और मौजूदा घटनाओं का प्रारम्भिक ज्ञान भी कराया जाता है।

स्व-चालित करघे

११५६ श्री रा० ना० सिंह क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि .

(क) कपड़े की मिलों में अब तक कितने स्वचालित करघे लगाये गये हैं;

(ख) इस के परिणामस्वरूप उत्पादन में कितनी वृद्धि हुई है, और

(ग) इनके लगाने से कितने व्यक्ति बेकार हो गये हैं और उन्हें कोई अन्य रोजगार देने के लिये क्या व्यवस्था की गयी है ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) (क) १ जनवरी, १९५७ तक लगाये गये स्वचालित करघों की संख्या १३,१६८ है।

(ख) स्वचालित करघों से तैयार किये गये कपड़े की जानकारी अलग से उपलब्ध नहीं है। स्वचालित करघों पर भी उतना ही कपड़ा तैयार होता है जितना कि साधारण शक्तिचालित करघों पर। लेकिन स्वचालित करघों पर तैयार किये गये कपड़े की किस्म अच्छी होती है।

(ग) इस बारे में ठीक ठीक जानकारी उपलब्ध नहीं है। स्वचालित करघे लगाने की अनुमति साधारणतः इसी शर्त पर दी जाती है कि उनके लगाने से मजदूरों की छटनी नहीं की जायगी। स्वचालित करघे लगाने से बेकार होने वाले मजदूरों को आम तौर पर सम्बद्ध कपड़ा मिल में या तो

अतिरिक्त कपी बना कर या दूसरे विभागों में काम दे दिया जाता है।

ऊनी कपड़ा

११५७. श्री रा० रा० मिश्र : क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) विदेशों से कितना ऊनी कपड़ा आयात होता है ;

(ख) ऊनी कपड़े के आयात को घटाने के लिये क्या कोई उपाय किये जा रहे हैं; और

(ग) यदि हां तो उनके ब्यौरे क्या है ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) १९५५–५६ तथा १९५६–५७ में क्रमशः १,५५,३०,००० रु० और १,१८,६०,००० रु० का ऊनी कपड़ा आयात किया गया ।

(ख) और (ग) १ जुलाई १९५७ से ऊनी कपड़े के आयात पर रोक लगा दी गयी है ।

मशीनी खिलौने का उद्योग

११५८. श्री रा० रा० मिश्र. क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) देश में मशीनी खिलौने बनाने के उद्योग को सरकार क्या सहायता दे रही है;

(ख) इस उद्योग द्वारा सरकारी सहायता से अब तक क्या प्रगति की गई है,

(ग) क्या इस सम्बन्ध में विदेशों से कोई विशेषज्ञ बुलाया गया है; और

(घ) यदि हां, तो उस पर कितना खर्च हुआ है ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) : (क) तथा (ख) एक विवरण सभा के पटल पर रख दिया गया है । [देखिये परिशिष्ट ३, अनुबन्ध संख्या ७२]

(ग) जी, नहीं ।

(घ) प्रश्न ही नहीं उठता ।

बाट तथा माप की मीट्रिक प्रणाली

११५९. श्री रा० रा० मिश्र . क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) बाट तथा माप की मीट्रिक प्रणाली से जनता को क्या लाभ होंगे; और

(ख) क्या सरकार द्वारा जनता को इन लाभों को बताने के लिये कोई कदम उठाये गये हैं और यदि हां, तो वे क्या हैं ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री (श्री मोरारजी देसाई) (क) देश भर में एक से बाट और पैमाने होने के फायदे बखूबी जाहिर हैं। मीटर प्रणाली संसार भर में विख्यात है और स्वीकृत मानी जाती है। इसे समझ लेना और याद रखना आसान है। इसे अपनाने में हिसाब किताब करने में आसानी हो जायेगी और इस से विभिन्न क्षेत्रों में समय और मेहनत की बचत हुआ करेगी।

(ख) मीटर प्रणाली के फायदे सरकार के निम्न प्रकाशनों में समझाये गये हैं :—

१. "मेमोरेन्डम आन दि एडोप्शन आफ मीट्रिक सिस्टम इन इन्डिया" ले० श्री पीताम्बर पन्त

२. "दि मीट्रिक सिस्टम आफ वेट्स एण्ड मेजर्स"

—प्रकाशक पब्लिकेशन्स डिवीजन, सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय ।